BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - आठ
पुरुषपरीक्षा

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

Topic :- दयावीर क कथा (व्याख्यान -2)

अल्लावद्दीन नामक यवनराजा आओर दयावीर हम्मीरदेवक संग युद्ध प्रारंभ भऽ गेल। युद्धक पहिले चरण मे दला यवनराज हम्मीरदेवक ओतय दूत पठाओल। दूत बाजल - हे हम्मीर राजा! बादशाहक हुकुम अछि जे हमर विरोधी महिमसाहकेँ हमरा सौंपि दी। नहि तँ कालहि सबेरे अहाँक किलाकेँ घोड़ाक टापसँ चूर कय महिमासाहक संगहि अहूँके यमपुर पठायब। हम्मीरदेव इ सुनि कऽ ललकारलनि - हमर शरणागतकेँ यमराज तँ आँखि उठाय देखिये ने सकैछ, बादशाहक कोन कथा। फुरफुरायल दूतक किलापर यवनराज तामसे लाल भय युद्ध-सन्नद्ध भय गेल।

दुनू दलमे युद्ध तेना बढ़ि चलल जे तीन वर्ष धरि प्रतिदिन युद्ध चलैत रहल। सामने-सामने लड़थि, पाछाँ हटथि, चढ़ि आबथि, पछाड़ि जाथि, मारथि आ मारल जाथि। यवनसेनाक आधा जवान मारल गेल, आ ओ अपन राजधानी दिसि जयबाक इच्छुक भेलाह।

दुहू व्यापारके विफल देखि, रायमल्ल और रामपाल नामक दुई गोत दुष्ट सचिव यवनराजसँ आबि मिलल। मिलाक तेज राजभवनके बता देलनि और कहलनि राति-राति हालचाल कुशल अछि। तालिए आपरकु किला दखल करा देल।

एम्हर हमीर देव अपन सैनिकसभकें कहल-हे जाजदेव प्रभृति योद्धागण! हमर सेना थोड़ अछि तथापि शरणागतक प्रति दयाभावकें कारणें बड़ पैघ सैन्यशक्ति रखनिहार यवनराजहुक संग युद्ध करब। तँ तोरालोकनि किला सँ बाहर भय आन ठाम जाइत जाह। जखन हमलोक निरपराधि राजा भय शरणके आयल यवनहुक प्रति दयाभावसँ संग्राममे मरण अंगीकार कय रहल छी, तखन हमलोकनि अपन जीविका प्राप्ति कोना अपन स्वामीकेँ छोड़ि कायर पुरुषक काज करब। तालिए और होरतहि सीमान्तक शत्रुकेँ मारि प्रभुक मनोरथ पूर्ति करब। राजाके प्रति नारी सेहो संग देवे छाथि और बाजल-जेना बिनु गाछक अवलम्बने लता नहि टिकैछ तहिना बिनु स्वामीक नारी सेहो जीवा योग नहि। साध्वी नारीक प्राण तँ रहै संसारमे स्वामीकु प्राणक संगहि बिदा होइछ। राजाक हमीरदेवक दरबारमे रहनिहार सभ युद्धलेल तैयार भऽ गेल।

ओर जखन युद्ध आरम्भ भेल तखन हमीरदेव तैयार भय घोड़ा पर चढ़ि अपन भतलोकनिकेँ

संग्राम, पराक्रम देखबैत सिपाहि सहायक भेलाह। तत्कालिक धारक प्रहारसँ शत्रुक सेनाकेँ घोड़ाकेँ कटैत, नष्ट करैत, सेनाकेँ खदेरि दूर भगाबैत, भाला ठेलल धड़केँ ने रुकैत शोणितक धारसँ महीमण्डलकेँ रंगैत, स्वयं आहत भै खंड-खंड शरीर भए, घोड़ाक पीठसँ (प्राणत्याग कयल, आ वीर धर्मसँ सूर्यमण्डलकेँ भेद करैत स्वर्गीय भेलाह। शरीर के त्यागि हम्मीरदेव संग्राम भूमिमे धराशायी भेलाह।

— समाप्त —

Samrjit Kumar